



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

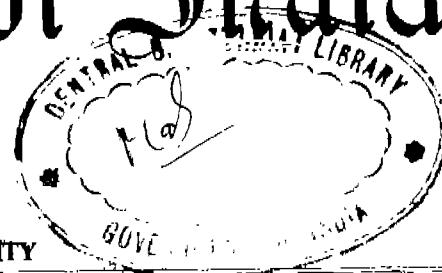
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY



सं. 103]

No. 103]

नई दिल्ली, सोमवार, अप्रैल 9, 2001/चैत्र 19, 1923
NEW DELHI, MONDAY, APRIL 9, 2001/CHAITRA 19, 1923

बाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(बाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 9 अप्रैल, 2001

प्रारंभिक निष्कर्ष

विषय: चीन के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित फास्फोरिक एसिड (तकनीकी ग्रेड) के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच-प्रारंभिक निष्कर्ष

सं. 11/1/2001-डीजीएडी.—भारत सरकार, 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा उसकी सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली 1995 को ध्यान में रखते हुए;

- (क) प्रक्रिया
- 2. निम्नलिखित प्रक्रिया का पालन किया गया है:-
- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) को नियमों के अन्तर्गत घरेलू उद्योग की ओर से मौजूद गुजरात अलकालीज एण्ड कैमिकल्स लिमिटेड और मौजूद बिल्ट कैमिकल्स लिमिटेड से लिखित याचिका प्राप्त हुई है, जिसमें चीन (जिसे इसके बाद संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित फास्फोरिक एसिड (तकनीकी ग्रेड) (जिसे इसके बाद संबद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया है;

- (ii) प्राधिकारी ने उपरोक्त नियम-5 के उपनियम-5 के अनुसार जांच शुरू करने से पहले याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत पाटन संबंधी आवेदन के प्राप्त होने के बारे में भारत स्थित चीन के दूतावास को सूचित किया;
- (iii) प्राधिकारी ने 'अकार्बनिक रसायन' से संबंधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 28 की अनुसूची-1 के अन्तर्गत आनेवाले फास्फोरिक एसिड (तकनीकी ग्रेड) के आयातों से संबंधित पाटनरोधी कार्यवाही को शुरू करते हुए दिनांक 7 फरवरी, 2001 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया सीमाशुल्क उपशीर्ष संख्या 2809.20 फास्फोरिक एसिड से संबंधित है, लेकिन उसमें फास्फोरिक एसिड के सभी ग्रेड शामिल हैं;
- (iv) प्राधिकारी ने उक्त सार्वजनिक सूचना की प्रति ज्ञात निर्यातकों, उद्योग संघों और शिकायतकर्ताओं तथा मैरेस्टार कैमिकल्स (मुम्बई) लिलो मुम्बई, जो संबद्ध वस्तुओं का घरेलू उत्पादक है, को भी भेजी और उन्हें लिखित रूप में अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया।
- (v) उपरोक्त नियम-6 के उप-नियम (3) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी ज्ञात निर्यातकों और भारत में संबद्ध देश के दूतावास को याचिका की एक प्रति उपलब्ध कराई।
- (vi) प्राधिकारी ने अपेक्षित सूचना प्राप्त करने के लिए चीन से निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी:-
 1. मैरो चीन नेशनल कैमिकल कंस्ट्रक्शन कारपोरेशन, बीजिंग
 2. मैरो गुंगा डोंग कैमिकल्स एण्ड इंपोर्ट एक्सपोर्ट कारपोरेशन, ग्वांजू
- (vii) जांच शुरू करने के बारे में नई दिल्ली स्थिति चीन के दूतावास को भी सूचित किया गया और अनुरोध किया गया कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली का निर्धारित समय के भीतर उत्तर देने की सलाह दें;
- (viii) फास्फोरिक एसिड (तकनीकी ग्रेड) के निम्नलिखित उपयोक्ताओं/आयातकों को प्रश्नावली भेजी गई थी:
 1. मैरो कैमिटाल-राइ इंडिया लिमिटेड, मुम्बई
 2. मैरो केमबोण्ड कैमिकल्स लिलो, नवी मुम्बई

3. मै0 कोलगेट पामोलिव (इ) लि., मुम्बई
4. मै0 कुन कैम प्रिट्रीटमेंट्स प्रा. लि., थाणे
5. मै0 पेंडिंगटन कैमिकल इंडस्ट्रीज (इंडिया), मुम्बई
6. मै0 प्रोटोकैम इंडस्ट्रीज, मुम्बई
7. मै0 कोरो कैम, मुम्बई
8. मै0 एसटीएस कैमिकल्स लि�0, पुणे
9. जय दिप, मुम्बई
10. मै0 भविता कैमिकल्स प्रा0 लि�0, मुम्बई
11. सी0 जे0 शाह, मुम्बई

(ix) उपरोक्त उपयोक्ताओं/आयातकों में से केवल मै0 भविता कैमिकल्स प्रा. लि., द्वारा प्रश्नावली का उत्तर दिया गया था। किसी भी निर्यातक ने प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया।

(x) याचिकाकर्ताओं से क्षति के बारे में अतिरिक्त सूचना मांगी गई थी, जो उन्होंने प्रस्तुत कर दी थी।

(xi) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के अगोपनीय अंश सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध रखे और उसे हितबद्ध पक्षों के निरीक्षण हेतु खुला रखा,

(xii) इस अधिसूचना में ***** से किसी हितबद्ध पक्ष द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना प्रदर्शित होती है और प्राधिकारी ने उसे नियमानुसार ऐसा ही माना है;

(xiii) जांच अवधि 1 अप्रैल, 2000 से 31 दिसम्बर, 2000 (नौ महीने) की है,

(xiv) जांच शुरू करने संबंधी सूचना की प्रतियां व्यापक परिचालन के लिए फिकरी, सीआईआई, एसोचेम इत्यादि को भी भेजी गई थीं।

(ख) याचिकाकर्ता के विचार

3. याचिकाकर्ताओं, मै0 गुजरात अल्कलीज एंड कैमिकल्स लि�0, और मै0 विल्ट कैमिकल्स लि�0 ने अपने जवाब में निम्नलिखित मुख्य मुद्दे उठाए हैं :-

(i) सम्बद्ध वस्तु जिसका उपयोग मुख्यतया सोडियम फासफेट, कैल्शियम फासफेट, आर्गेनिक फासफेट, अमोनियम फासफेट इत्यादि के विनिर्माण के लिए किया जाता है, के उत्पादन में उनका एक प्रमुख हिस्सा बनता है। यद्यपि फास्फोरिक एसिड विभिन्न रूपों में उत्पादित किया जा रहा है तथापि केवल तकनीकी ग्रेड ही इस याचिका का सम्बद्ध मामला है। फास्फोरिक एसिड (तकनीकी ग्रेड) में शुद्धता का स्तर न्यूनतम 85% है जबकि अन्य ग्रेडों में कम शुद्धता स्तर है।

(ii) यह उत्पाद सीमाशुल्क वर्गीकरण के "अकार्बनिक रसायनों" के अध्याय 28 के अन्तर्गत आता है जिसमें फास्फोरिक एसिड के सभी ग्रेड शामिल हैं। जैसा कि ऊपर बताया गया है, केवल तकनीकी ग्रेड ही इस याचिका का सम्बद्ध मामला है न कि अन्य ग्रेड। केवल "तकनीकी ग्रेड" ही जांच का सम्बद्ध मामला होने के कारण वाणिज्यिक आसूचना एवं साखियकी महानिदेशालय के आकड़े इस मामले में संगत नहीं होंगे और हमें गौण स्रोतों से उपलब्ध आंकड़ों पर निर्भर करना होगा। सीमाशुल्क वर्गीकरण 2809.2001. है। याचिकाकर्ताओं के पास गौण स्रोतों से एकत्र किए गए आंकड़े हैं और उन्होंने आयात और विभिन्न पत्तनों पर अनेक सीमाशुल्क घरानों द्वारा जारी सीमाशुल्क दैनिक सूची के आधार पर तैयार किए हैं।

(iii) मै0 गुजरात अलकलीज एंड कैमिकल्स, बड़ौदा, जो कि सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनी है और मै0 बिल्ट कैमिकल्स लि0, सिकंदराबाद का घरेलू उत्पादन में प्रमुख हिस्सा बनता है।

(iv) क्योंकि यह जांच चीन से हुए आयात के विरुद्ध शुरू करने का प्रस्ताव है इसलिए याचिकाकर्ताओं ने कहा है कि चीन की एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था होने के कारण 15 जुलाई, 1999 को किए गए संशोधन के द्वारा गैर बाजार अर्थव्यवस्था के बारे में भारतीय पाटनरोधी कानूनों में किए गए प्रावधान का अनुसरण किया जाना चाहिए और भारत में उत्पादन की परिकलित लागत का उपयोग सामान्य मूल्य के रूप में करना चाहिए। यह तर्क दिया गया है कि चीन में विनिर्माता फास्फोरिक एसिड (तकनीकी ग्रेड) का उत्पादन विद्युत के साथ रॉक फासफेट की प्रतिक्रिया कराकर करते हैं जिसके परिणामस्वरूप

पीला/सफेद फॉस्फोरस प्राप्त होता है जिसकी बाद में हुवा के साथ प्रतिक्रिया कराई जाती है जिससे फास्फोरिक आक्साइड प्राप्त होता है, और बाद में इसकी जल के साथ प्रतिक्रिया से तकनकी ग्रेड का फोस्फोरिक एसिड (एच 3 पी ओ 4) प्राप्त होता है। ऊपर वर्णित प्रक्रिया, अनेक कच्चे माल के दिए गए निविष्टि मानदण्डों और कच्चे माल के उपयोग और उनकी अन्तर्राष्ट्रीय कीमतों का उपयोग करके चीन में उत्पादन की परिकलित लागत की गणना की गई है।

ग. आयातकों और निर्यातकों के विचार

4. जैसाकि ऊपर बताया गया है केवल एक आयातक में भविता कैमिकल्स प्रा० लि०, मुम्बई ने प्रश्नावली का उत्तर दिया है और अपने जवाब में उसने निम्नलिखित विचार प्रकट किए हैं :-

- (i) याचिकाकर्ता का यह आरोप कि सम्बद्ध वस्तु प्रचलित अन्तर्राष्ट्रीय दर से कम दर पर पाटित की जा रही है सत्य और औचित्वपूर्ण नहीं है;
- (ii) याचिकाकर्ता कम्पनियों के अलावा, सम्बद्ध वरतु मै० एक्सैल इंडस्ट्रीज लि०, मै० स्टार कैमिकल्स लि०, मै० रोसकैम इंडस्ट्रीज लि० (ईओयू) द्वारा विनिर्मित की जा रही है;
- (iii) जबकि याचिकाकर्ता कम्पनियाँ सम्बद्ध वस्तु का विनिर्माण ^{प्रत्यक्ष} रांक फासफेट से करती है, जिस प्रक्रिया को "इजराइली प्रक्रिया" भी कहा जाता है। वहीं उपर्युक्त (ii) में उल्लिखित कम्पनियाँ फासफोरिक एसिड का विनिर्माण पीले फासफोरस से करती हैं;
- (iv) यह कि वे फास्फो ग्रेड डीआई कैल्सियम फारफेट के विनिर्माता हैं जो भारत ^{में} एक 100% आयात प्रतिस्थापन उत्पाद है और जो उनकी कच्ची सामग्री भी है। डीआई कैल्सियम फारफेट (डीसीपी) का मुख्य उपयोग लैम्पों ट्यूबलाइटों में प्रयुक्त होने वाले डे लाइट फोर्सफोर्स के निर्माण में किया जाता है जो काफी अधिक शुद्धता वाला ग्रेड है; डीसीपी के विनिर्माण से पहले वे तकनीकी ग्रेड फासफोरिक एसिड 87% से डाई अमोनियम फासफेट (डीएपी) का विनिर्माण करते हैं जो डीएपी का घोल प्राप्त करने के लिए फासफोरस एसिड में अमोनिया गैस प्रवाहित करके किया जाता है।
- (v) यह कि याचिकाकर्ता संबद्ध वस्तु की आपूर्ति प्रतिस्पर्धी दरों पर नहीं कर रहे हैं और यह कि उन्होंने अपने एजेंटों और स्टाकधारियों की सहायता से एक संघ बनाकर अपनी कीमत बढ़ायी है। इस कथन के समर्थन में उन्होंने खरीद बिलों की प्रतियाँ प्रस्तुत की हैं। आज

की तारीख में अग्रिम लाइसेंस और डीईपीबी का उपयोग किए बिना आयातित संबद्ध वस्तुओं की लागत लगभग 31 रुपए प्रति किलोग्राम आती है, जिसमें सीमाशुल्क और अन्य लागतें शामिल हैं:

- (vi) पाटनरोधी शुल्क लगाने से उनकी प्रतिस्थापक आयात सामग्री डीसीपी की लागत में वृद्धि होगी और यह गैस-प्रतिस्पर्धी हो जाएगी जिससे आखिर में उनकी इकाई रुग्ण इकाई हो जाएगी क्योंकि उनकी पूरी इकाई केवल आयातित संबद्ध वस्तुओं पर निर्भर है;
- (vii) याचिकाकर्ताओं द्वारा विनिर्मित संबद्ध वस्तुएँ घटिया किस्म की हैं और उनकी विनिर्माण प्रक्रिया अन्तर्राष्ट्रीय मानदण्डों से मेल नहीं खाती हैं।

(घ) प्राधिकारी द्वारा जांच और निष्कर्ष

5. निर्यातकों, आयातकों, घरेलू उद्योग और अन्य हितबद्ध पक्षों द्वारा दिए गए आवेदनों की इन निष्कर्षों पर पहुंचते समय जांच की गई और उन पर विचार किया गया तथा जहां उचित समझा गया वहां इसके आगे इन पर चर्चा की गई है।

6. प्राधिकारी इस बात की पुष्टि करते हैं कि चीन के निर्यातकों ने निर्धारित प्रपत्र में और निर्धारित तरीके से कोई प्रत्यक्ष उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है और उपरोक्त नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर चीन से हुए निर्यातों के संबंध में निष्कर्ष दिए गए हैं।

7. नए निर्यातकों के मामलों पर अथवा ^{जो} निर्यातक कीमत संबंधी वचनबद्धता देने के इच्छुक हैं, उनके मामलों पर उनके अनुरोध पर प्राधिकारी द्वारा उपरोक्त नियमों के अनुसार विचार किया जाएगा।

ड. विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु

8. शामिल उत्पाद सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की अनुसूची-। के "अकार्बनिक रसायन" से संबंधित अध्याय 28 के तहत आने वाला "फासफोरिक एसिड (तकनीकी ग्रेड)" है। सीमाशुल्क उपशीर्ष 2809.20 फासफोरिक एसिड से संबंधित है लेकिन इसमें फासफोरिक एसिड के सभी ग्रेड

शामिल हैं। तथापि, फासफोरिक एसिड का केवल तकनकी ग्रेड ही वर्तमान जांच की विषय वस्तु है। फासफारिक एसिड के तकनीकी ग्रेड की शुद्धता का स्तर 85% अथवा इससे अधिक है और इसका उपयोग सोडियम फासफेट, कैल्शियम फासफेट, मैग्नेशियम फासफेट, अमोनियम फासफेट इत्यादि के उत्पादन में किया जाता है। यद्यपि, फासफोरिक एसिड का उत्पादन विभिन्न ग्रेडों में किया जाता है, तथापि, केवल तकनकी ग्रेड ही इस याचिका की विषय वस्तु है। फासफोरिक एसिड के अन्य ग्रेड, जिनकी शुद्धता का स्तर कम है, वर्तमान जांच की विषय वस्तु नहीं है। इसके अलावा, सीमाशुल्क का वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और वर्तमान जांच के दायरे पर बाध्यकारी नहीं है। चूँकि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित वस्तुओं के 'समान वस्तु' हैं, इसलिए जांच के उद्देश्य से याचिकाकर्ताओं द्वारा उत्पादित वस्तुओं को नियमों के अर्थों के भीतर संबद्ध देश से आयातित फासफोरिक एसिड (तकनकी ग्रेड) के 'समान वस्तु' के रूप में माना जारहा है।

9. यद्यपि आयातक ने यह दावा किया है कि वे जीएसीएल द्वारा उत्पादित सामग्री का उपयोग नहीं कर सकते हैं। यहाँ यह उल्लेख किया जा सकता है कि संबद्ध वस्तुओं के अन्य ^{घरेलू} _{उत्पादक} भी हैं। इसके अलावा, मै0 भविता कैमिकल्स प्रा0 लि0 संबद्ध वस्तुओं के अन्य उपयोगकर्ता भी हैं, जिन्होंने प्रश्नावीली का जवाब नहीं दिया है। जांच के दायरे के बारे में अलगअलग अन्त्य उपयोग अथवा अलग-अलग अन्त्य उपयोगकर्ताओं के आधार पर निर्णय नहीं लिया जा सकता है। इसलिए प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद की परिभाषा तथा जांच के दायरे के बारे में वही दृष्टिकोण जारी रखने का निर्णय लिया है जैसाकि जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना में उल्लेख किया गया है तथा ऊपर चर्चा की गई है।

च. घरेलू उद्योग

10. मै0 गुजरात अलकलीज एण्ड कैमिकल्स लि0 तथा मै0 बीआईएलटी कैमिकल्स लि0 नामक याचिकाकर्ता कम्पनियों के अलावा संबद्ध वस्तु के अन्य उत्पादक हैं :- मै0 एक्सेल इंडस्ट्रीज लि0, मै0 स्टार कैमिकल्स लि0 तथा मै0 रोसधेम इंडस्ट्रीज लि0। मै0 स्टार कैमिकल्स ने क्षमता तथा उत्पादन के बारे में सूचना दी है। घरेलू उद्योग द्वारा यह कहा गया है कि एक्सेल इंडस्ट्रीज लि0 की विनिर्माण संबंधी सुविधाएँ स्टार कैमिकल्स में मौजूद हैं। आगे यह भी कहा गया

है कि मैं रोसचेम इंडस्ट्रीज लिंग एक ईओयू है और यह पिछले दो वर्षों से बंद पड़ी है और इसलिए यह घरेलू उद्योग का हिस्सा नहीं है। याचिकाकर्ताओं का कुल घरेलू उत्पादन में 25 प्रतिशत से अधिक का हिस्सा है। चूँकि किसी भी घरेलू उत्पादक ने जांच का विरोध नहीं किया है इसलिए याचिकाकर्ताओं के पास याचिका दायर करने का आधार है। किसी भी प्रतिवादी ने इस दावे को चुनौती नहीं दी है। इसलिए जहां तक याचिका दायर करने के लिए याचिकाकर्ताओं के आधार का संबंध है, प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया है कि वर्तमान जांच के उद्देश्य के लिए याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

छ. पाठन तथा सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत के संबंध में किए गए दावों की जांघ

सामान्य मूल्य

11. धारा 9 के (1) (ग) के अंतर्गत किसी वस्तु के लिए सामान्य मूल्य का अर्थ है :-

- (i) व्यापार के सामान्य व्यवहार में समान वस्तुओं के लिए धारा (6) के अन्तर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो, या
- (ii) जहां निर्यातक देश या क्षेत्र के स्वदेशी बाजार में व्यापार के सामान्य व्यवहार में समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हो या विशेष बाजार दशा के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के स्वदेशी बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण, ऐसी बिक्रियों की वजह से तुलना नहीं हो सकती हो तो सामान्य मूल्य या तो :-

(क) निर्यातक देश या क्षेत्र से आयात किये जाने पर समान वस्तु का उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य या उचित तीसरे देश का तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य; या

(ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित, प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ मूलता के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत;

12. प्राधिकारी ने धारा 9क (l) (ग) के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के उद्देश्य से सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजी। तथापि, चीन के किसी निर्यातक ने प्राधिकारी को जवाब नहीं दिया है और कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की है। इसलिए प्राधिकारी यह निर्णय लेते हैं कि चीन के किसी भी निर्यातक ने प्राधिकारी के साथ वैसा सहयोग नहीं किया है, जैसाकि नियमों के तहत अपेक्षित है। घरेलू उद्योग ने उत्पादन की आकलित लागत के आधार पर चीन में सामान्य मूल्य के संबंध में सूचना प्रस्तुत की है। चीन के निर्यातकों के असहयोग को देखते हुए प्राधिकारी ने उत्पादन की आकलित लागत के आधार पर चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है।

निर्यात कीमत

13. जैसाकि ऊपर कहा गया है फासफोरिक एसिड का केवल तकनीकी ग्रेड ही जांच के लिए संबद्ध ग्रेड है, जबकि डीजीसीआई एंड एस द्वारा संकलित आंकड़े फासफारिक एसिड के सभी ग्रेडों के आयात से संबंधित हैं। उपरोक्त के मद्देनजर ये आंकड़े सीमाशुल्क की दैनिक सूची के आधार पर द्वितीयक स्रोतों से एकत्र किए गए हैं। इसके अलावा, घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए साक्ष्य के आधार पर निवल निर्यात कीमत प्राप्त करने के लिए माल-भांडा, समुद्री बीमा, कमीशन, पत्तन पर रख-रखाव इत्यादि के लिए समायोजन प्रदान किया गया है।

पाटन मार्जिन

14. सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम तथा पाटनरोधी नियमों में यथा उल्लिखित सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन के निर्धारण से संबंधित सिद्धांतों का वर्णन इन नियमों के अनुबंध-। में किया गया है। उत्पादन की आकलित लागत पर आधारित चीन के लिए सामान्य मूल्य *** अमरिकी डालर प्रति मी. टन बैठता है। इसी तरह के मानदण्डों के आधार पर तथा इसी तरह के समायोजनों की अनुमति देने पर निवल निर्यात कीमत *** अमरीकी डालर प्रति मी. टन बैठती है। चीन से हुए संबृद्ध वस्तुओं के निर्यातों के लिए पाटन मार्जिन निर्यात कीमत का 61% बैठता है।

ज. क्षति

15. पाटनरोधी नियमावली का नियम-॥ निम्नानुसार है:-

^१ क्षति का निर्धारण :

(1) विनिर्दिष्ट देशों से आयातों के मामले में, निर्दिष्ट प्राधिकारी यह निष्कर्ष भी रिकार्ड करेगा कि भारत में ऐसी वस्तु के आयात से किसी स्थापित उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है अथवा क्षति की आशंका है अथवा यह सामग्री भारत में किसी उद्योग की स्थापना को रोकती है।

(2) निर्दिष्ट प्राधिकारी पाटित आयातों की मात्रा, घरेलू बाजार में समान वस्तुओं की कीमत पर उसके प्रभाव तथा ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित और इन नियमों के अनुबंध-॥ में निर्धारित सिद्धांतों के अनुसार सभी संगत तथ्यों को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग को हुई क्षति, घरेलू उद्योग के लिए क्षति के खतरे, घरेलू उद्योग की स्थापना में वास्तविक बाधा और पाटित आयातों तथा क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का निर्धारण करेंगे।^२

16. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय यह जांच करना आवश्यक समझा जाता है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण कीमत में कोई उल्लेखनीय गिरावट आई है, अथवा क्या इस प्रकार के आयातों से कीमतों में अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक गिरावट आई है। भारत में घरेलू उद्योग पर प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने ऐसे अन्य संकेतकों पर विचार किया है जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव छलते हैं, जैसे उत्पादन, बिक्री, भंडार, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति इत्यादि। यह पाया गया है कि जांच अवधि के दौरान याचिकाकर्ता कम्पनियों के उत्पादन में वार्षिक आधार पर लगभग 13% की गिरावट आई है। याचिकाकर्ता कम्पनियों का क्षमता उपयोग भी 85% से घटकर लगभग 72% तक रह गया है जो जांच अवधि के दौरान पाटित आयातों की अधिक मात्रा के कारण हुआ है। याचिकाकर्ता कम्पनियों के पास संबद्ध वस्तु के भंडार में भी वृद्धि हुई है तथापि, क्षति को प्रमाणित करने वाला सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानदण्ड पाटित कीमत पर आयातों के कारण कम बिक्री

वसूली है। याचिकाकर्ता कम्पनियों को जांच अवधि के दौरान बेचे गए उत्पाद की प्रत्येक इकाई पर उत्पाद लागत के 25% तक भारी नुकसान हो रहा है।

झ. कारणात्मक संबंध

17. इस बात के निर्धारण में कि क्या घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति पाटित आयातों के कारण हुई थी, प्राधिकारी ने निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखा :-

- (i) चीन से पाटित कीमतों पर संबद्ध वस्तु के भारी आयातों के चलते घरेलू उद्योग को अपनी बिक्री कीमतों को अलाभकारी स्तर पर रखने के लिए बाध्य होना पड़ा जिसके परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में कीमत में कटौती की स्थिति उत्पन्न हुई।
- (ii) चीन से हुए आयातों ने भारतीय बाजार में इस उत्पाद की कीमत को इस हद तक कम कर दिया कि घरेलू उद्योग अपनी पूरी उत्पादन लागत की वसूली करने तथा भारत में संबद्ध वस्तुओं की बिक्री से एक उचित लाभ कमाने से वंचित रहे।

ज. भारतीय उद्योग के हित

18. सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य ऐसे पाटन को समाप्त करना है जिससे भारतीय उद्योग को नुकसान हो रहा है तथा भारतीय बाजार^{ऐसी} खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की पुनः स्थिति लाना जोकि देश के सामान्य हित में है।

19. प्राधिकारी द्वारा यह माना जाता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से फासफोरिक एसिड (तकनीकी ग्रेड) के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित होंगे और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की सापेक्ष प्रतिस्पर्धात्मता पर प्रभाव पड़ सकता है। किन्तु, पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत, पाटनरोधी उपाय लागू करने से पाटन की प्रक्रिया से होने वाले अनुचित लाभ समाप्त होंगे, भारतीय उद्योग का ह्रास रुकेगा और संबद्ध वस्तुओं के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध हो सकेंगे। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों से चीन से होने वाले आयात किसी भी प्रकार कम नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए इस उत्पाद की उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ेगा। उपभोक्ता तब भी दो या इससे भी ज्यादा आपूर्ति के स्रोत रख सकते हैं।

ट. निष्कर्ष

20. पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि:

- (i) फासफोरिक एसिड (तकनकी ग्रेड) का चीन से भारत को निर्यात इसके सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर किया गया है;
- (ii) भारतीय उद्योग को क्षति हुई है;
- (iii) यह क्षति चीन से हुए पाटित आयातों के कारण हुई है।

21. प्राधिकारी यह आवश्यक समझते हैं कि घरेलू उद्योग को हो रही क्षति को समाप्त करने के उद्देश्य से चीन से होने वाले फासफोरिक एसिड (तकनकी ग्रेड) के सभी आयातों पर अंतिम निर्धारण होने तक अनन्तिम रूप से पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए। प्राधिकारी द्वारा ज्ञात निर्यातक के लिए निर्धारित पाटन मार्जिन उपरोक्त पैराग्राफों में दर्शाया गया है।

22. तदनुसार, प्राधिकारी यह सिफारिश करते हैं कि अंतिम निर्धारण होने तक चीन के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित फासफोरिक एसिड (तकनकी ग्रेड), जो सीमाशुल्क कोड 2809.20 के अंतर्गत आता है, के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से!8.7.....अमरीकी डालर/मी. टन का अनन्तिम पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए।

ठ. आगे की प्रक्रिया

31. प्रारंभिक निष्कर्षों को अधिसूचित करने के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाएगी:-

(क) प्राधिकारी सभी हितबद्ध पक्षों से इन निष्कर्षों पर टिप्पणियां आमंत्रित करेंगे और अंतिम निष्कर्षों में उनपर विचार किया जाएगा;

(ख) प्राधिकारी द्वारा निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ता और संबंधित समझे जाने वाले अन्य हितबद्ध पक्षों को अलग से लिखा जा रहा है जो प्रारंभिक निष्कर्ष की तारीख से 40 दिनों के

भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकते हैं। कोई अन्य हितबद्ध पक्ष भी इन निष्कर्षों के प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकता है।

- (ग) प्राधिकारी मौखिक अनुरोध हेतु सभी हितबद्ध पक्षों को अवसर प्रदान करेंगे जिन्हें बाद में लिखित रूप में प्रस्तुत करना होगा;
- (घ) प्राधिकारी आवश्यक समझी गई सीमा तक आगे सत्यापन करेंगे;
- (ड.) प्राधिकारी अंतिम निष्कर्ष घोषित करने से पूर्व आवश्यक तथ्यों का खुलासा करेंगे।

ए.ल. दी. मप्टक्रापि, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)
(DIRECTORATE GENERAL OF ANTIDUMPING & ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 9th April, 2001

PRELIMINARY FINDINGS

Subject : Anti-dumping investigation concerning imports of Phosphoric Acid (Technical grade) originating in or exported from the China-preliminary findings

No. 11/1/2001-DGAD.— The Government of India having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof;

A. PROCEDURE

2. The procedure described below has been followed:-

- (i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a written petition from M/s. Gujarat Alkalies & Chemicals Ltd., and M/s. Bilt Chemicals Limited, on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Phosphoric Acid (Technical grade) (hereinafter referred to as subject goods) originating in and exported from China (hereinafter referred to as subject country);

- (ii) The Authority notified the Embassy of China in India about the receipt of dumping application made by the petitioner before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 *supra*;
- (iii) The Authority issued a Public Notice dated 7th February, 2001 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti dumping proceedings concerning imports of Phosphoric Acid (Technical grade) falling under Chapter 28 of Schedule I of the Customs Tariff Act, relating to 'inorganic chemicals'. Custom sub-heading 2809.20 relates to Phosphoric Acid but includes all grades of Phosphoric Acid;
- (iv) The Authority forwarded copy of the said public notice to the known exporters, importers, industry associations and to the complainants and also M/s. Star Chemicals (Bombay) Ltd., Mumbai, a domestic producer of subject goods and gave them an opportunity to make their views known in writing.
- (v) According to sub-rule (3) of Rule 6 *supra*, the Authority provided a copy of the petition to all the known exporters and Embassy of subject country in India.
- (vi) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the following exporters from China:
 1. M/s. China National Chemical Construction Corporation, Beijing
 2. M/s. Gunga Dong Chemicals and Import Exports Corporation, Guangzhou
- (vii) The Embassy of China in New Delhi were also informed about the initiation of investigation and requested to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time;
- (viii) The questionnaire was sent to the following users/importers of Phosphoric Acid (Technical grade):

1. M/s. Chemetall-Rai India Ltd., Mumbai
2. M/s. Chembond Chemicals Ltd., Navi Mumbai
3. M/s. Colgate Palmolive (I) Ltd., Mumbai
4. M/s. Kun Chem Pretreatments Pvt Ltd., Thane
5. M/s. Peddington Chemical Industries (India), Mumbai
6. M/s. Protochem Industries, Mumbai
7. M/s. Coro Chem, Mumbai
8. M/s. STS Chemicals Ltd., Pune
9. Jaydip, Mumbai
10. M/s. Bhavita Chemicals Pvt Ltd., Mumbai
11. CJ Shah, Mumbai

- (ix) Among the users/importers, response to the questionnaire was filed only by M/s. Bhavita Chemicals Pvt Ltd. None of the exporters responded to the questionnaire.
- (x) Additional information regarding injury was sought from the petitioners, which was also furnished;
- (xi) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties;
- (xii) ***** in this notification represents information furnished by the interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;
- (xiii) The investigation covered the period from 1st April 2000 to 31st December 2000 (nine months);
- (xiv) Copies of initiation notice was also sent to FICCI, CII, ASSOCHAM etc., for wider circulation.

B. PETITIONER'S VIEWS

3. The petitioners, M/s. Gujarat Alkalies & Chemicals Ltd., and M/s. Bilt Chemicals Limited have made the following major points in their submissions:-

(i) They account for a major portion of the production of subject goods which is primarily used for manufacture of sodium phosphate, calcium phosphate, organic phosphate, ammonium phosphate, etc. Though Phosphoric Acid is

produced in various forms, however, it is only the technical grade which is the subject matter of this petition. Phosphoric Acid (technical grade) has a purity level of minimum 85% whereas other grades have lower purity levels.

(ii) The product falls under Chapter 28 relating to 'inorganic chemicals' on the customs classification which includes all grades of Phosphoric Acid. As stated above, it is only the technical grade which is the subject matter of this investigation and not the other grades. Because of only 'technical grade' being subject matter of investigation, Director General Commercial Intelligence and Statistics data will not be relevant in this case and we have to rely on data available from secondary sources. The custom classification is 2809.2001. The petitioners have compiled data from secondary sources and prepared import details on the basis of Customs Daily List issued by various Custom Houses at different ports.

(iii) M/s. Gujarat Alkalies and Chemicals, Baroda, which is public sector company and M/s. Bilt Chemicals Ltd., Secundrabad, account for major portion of the domestic production.

(iv) As the investigation is proposed to be initiated against import from China, the petitioners have stated that China being a non market economy, the provision introduced in the Indian anti dumping laws on the non market economy vide amendment dated 15th July 1999 may be followed and the constructed cost of production in India should be used as the normal value. It has been argued that manufacturers in China produce Phosphoric Acid (technical grade) by reacting rock phosphate with power resulting in yellow/white phosphorous which is further reacted with air resulting in phosphoric oxide which on further reaction with water gives technical grade phosphoric acid (H_3PO_4). Using the above mentioned process, given input norms of various raw materials and utilisation and international prices of raw materials, the constructed cost of production in China has been calculated.

C IMPORTERS AND EXPORTERS VIEWS

4. As stated above only one importer M/s. Bhavita Chemicals

Private Limited, Mumbai have responded to the questionnaire and expressed the following views in their submissions:-

- (i) The petitioners allegation that the subject goods are being dumped at a lower rate than the prevailing international rate is not true and justifiable;
- (ii) Apart from the petitioner companies, the subject goods are being manufactured by M/s. Excel Industries Ltd., M/s. Star Chemicals Ltd., M/s. Rosschem Industries Ltd. (EoU);
- (iii) While the petitioner companies manufacture subject goods directly from rock phosphate which process is also called as 'israeli process' the companies mentioned in (ii) above manufacture phosphoric acid from yellow phosphorous;
- (iv) That they are the manufacturers of phospho Gr DI calcium phosphate which is a 100% import substitute product in India which also is their raw material. The main use of DI calcium phosphate (DCP) is in making day light phosphors used in lamps, tube lights which is of very high purity grade; before manufacture of DCP they first manufacture DI ammonium phosphate (DAP) from technical grade phosphoric acid 87% by passing ammonia gas in phosphorous acid to get solution of DAP;
- (v) That the petitioners are not supplying the subject goods at competitive rates and that they have jacked up their price by forming a syndicate with the help of their agents and stockists. In support of this statement they have furnished copies of purchase bills. As on date without use of advance licence and DEPB the cost of imported subject goods comes to around Rs.31 per kg, which includes customs duty and other costs;
- (vi) Imposition of anti dumping duty will hike the cost of their import substitute material DCP and will be uncompetitive which ultimately will lead their unit to become sick as their entire unit is dependent only on the imported subject goods;

(vii) The subject goods manufactured by the petitioners' are of poor quality and their manufacturing process does not match international standards;

D. EXAMINATION AND FINDING BY AUTHORITY

5. The submission made by the exporters, importers, domestic industry and other interested parties have been examined and considered while arriving at these findings and wherever appropriate have been dealt hereinafter.

6. The Authority confirms, the absence of any direct response from the exporters from China in the form and manner prescribed and having made the findings with regard to exports from China on the basis of the fact available to it as per rule 6(8) *supra*.

7. The cases of new exporters or those stated to be willing to give price undertaking shall be considered, on request, by the Authority in accordance with the Rules *supra*.

E. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

8. The product involved is "Phosphoric Acid (Technical grade)" falling under Chapter 28 of Schedule I of Custom Tariff Act relating to 'inorganic chemicals'. Custom sub-heading 2809.20 relates to Phosphoric Acid but includes all grades of Phosphoric Acid. However, it is only the technical grade of Phosphoric Acid which is the subject matter of the present investigation. The technical grade of Phosphoric Acid has a purity level of 85% or above and is used for the production of sodium phosphate, calcium phosphate, magnesium phosphate, ammonium phosphate, etc. Though Phosphoric Acid is produced in various grades, however, it is only the technical grade which is the subject matter of this petition. Other grades of Phosphoric Acid which have lower purity level are not the subject matter of present investigation. Further, the custom classification is only indicative and not binding on the scope of present investigation. Since the goods produced by domestic industry are 'like article' to the goods originating in or exported from the subject country, for the purpose of investigation, the goods produced by the petitioners are being treated as 'like articles' of Phosphoric Acid (Technical grade) imported from the subject country within the meaning of the Rules

9. Though the importer has claimed that they cannot use the material produced by GACL. Here may be mentioned that there are other domestic producers of the subject goods also. Further there are other users of the subject goods in the country other than M/s Bhavita Chemicals Pvt. Ltd. who have not responded to the questionnaire. The scope of investigation cannot be decided on the basis of the individual end use or individual end users. The Authority has, therefore decided to continue with the definition of product under consideration and the scope of investigation as specified in the Initiation Notification and discussed above .

F. DOMESTIC INDUSTRY

10. Apart from the petitioner companies M/s. Gujarat Alkalies and Chemicals Ltd., and M/s. BILT Chemicals Ltd., the other producers of subject goods are M/s. Excel Industries Ltd., M/s. Star Chemicals Ltd., and M/s. Rosschem Industries Ltd. M/s Star Chemicals have given the information regarding the capacity and production. It has been stated by the domestic industry that manufacturing facilities of Excel Industries Ltd. are in the Star Chemicals. It has further been stated that M/s Rosschem Industries Ltd. is an EOU and is closed for past two years and hence do not form the part of the domestic industry. The petitioners account for more than 25 per cent of the total domestic production. As no domestic producer has opposed investigation, the petitioners have the standing to file the petition. None of the respondents have challenged this claim. Therefore, as far as the issue of standing of the petitioners to file the petition is concerned, the Authority has determined that petitioners represent the domestic industry for the purpose of present investigation.

G. DUMPING & EXAMINATION OF CLAIMS MADE ON NORMAL VALUE & EXPORT PRICES

Normal Value

11. Under Section 9A(1)© normal value in relation to an article means:

- (i) The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section(6); or

(ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either –

(a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

(b) the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);

12. The Authority sent questionnaires to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9A(1)(c). However, none of the exporters from China responded to the Authority and have not furnished any information. The Authority, therefore, holds that none of the exporters from China have cooperated with the Authority as envisaged under the Rules. The domestic industry has furnished information with regard to the normal value in China based on the constructed cost of production. In view of non-cooperation from the exporters from China, the Authority has determined normal value in China on the basis of the constructed cost of production.

Export Price

13. As has been stated above, it is only the technical grade of Phosphoric Acid which is the subject grade for investigation whereas the data compiled by DGCI&S relate to import of all the grades of Phosphoric Acid. In view of above, the data has been compiled from secondary sources based on Customs Daily Lists. Further adjustments has been given on account of freight, marine insurance, commission, port handling etc. To arrive at net export price on the basis of evidence provided by domestic industry.

Dumping Margin

14. The principles governing the determination of normal value, export price and the dumping margin as laid down in the Custom Tariff Act and the Anti Dumping Rules are elaborated in Annexure I to the Rules. The normal value for China based on the constructed cost of production works out to US\$ *** per MT. The net export price worked out on the basis of similar parameters and allowing similar adjustments works out to US\$ *** per MT. The dumping margin for exports of the subject goods from China comes to 61 % of the export price.

H. INJURY

15. Rule 11 of Anti Dumping Rules reads as follows:

"Determination of Injury:

- (i) In the case of imports from specified countries, the designated authority shall record a further finding that import of such article into India causes or threatens material injury to any established industry or materially retards the establishment of any industry in India;
- (ii) The designated authority shall determine the injury to domestic industry, threat of injury to domestic industry, material retardation to establishment of domestic industry and a causal link between dumped imports and injury, taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on price in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles and in accordance with the principles set out in Annexure II to these rules."

16. In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared

with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree. For the examination of the impact on the domestic industry in India, the Authority considered such further indices having a bearing on the state of industry as production, sales, stock, profitability, net sales realisation etc. It has been found that on annualized basis there has been a decline in production during the POI of approximately 13% for the petitioner companies. Also the capacity utilisation of petitioner companies has fallen from 85% to approximately 72% which is on account of substantial volume of dumped imports during the period of investigation. The stocks of the subject good have also increased with the petitioner companies. However, the most significant parameter evidencing injury is the low sales realisation on account of price undercutting by imports at dumped prices. The petitioner companies are incurring massive losses to the extent of 25% of the cost of production on every unit of the product sold during the period of investigation.

I. CAUSAL LINK

17. In determining whether material injury to the domestic industry was caused by the dumped imports, the Authority took into account the following facts:-

- (i) Substantial imports of subject goods from China at dumped prices forced the domestic industry to keep its selling prices at unremunerative level which resulted in a situation of price undercutting in the Indian market.
- (ii) The imports from China suppressed the prices of the product in the Indian market to such an extent that the domestic industry was prevented from recovering its full cost of production and earn a reasonable profit from the sale of subject goods in India.

J. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST

18. The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market which is in the general interest of the country.

19. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using phosphoric acid (technical grade) and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from China in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

K. CONCLUSIONS

20. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- (i) Phosphoric Acid (technical grade) has been exported to India from China below its normal value;
- (ii) the Indian industry has suffered injury;
- (iii) the injury has been caused by the dumped imports from China;

21. The Authority considers it necessary to impose an anti dumping duty provisionally, pending final determination, on all imports of Phosphoric Acid (technical grade) from China in order to remove the injury to the domestic industry. The margin of dumping for known exporter determined by the Authority is indicated in the paragraphs above.

22. Accordingly, the Authority recommends that provisional anti dumping duties of US \$ 187 per MT be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government on all imports of Phosphoric Acid (technical grade) falling under customs code 2809.20 originating in or exported from China pending final determination.

L. FURTHER PROCEDURE

23. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:-

- (a) The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;
- (b) Exporters, importers, petitioner and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of preliminary finding. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings;
- (c) The Authority would provide opportunity to all the interested parties for making oral submissions which have to be rendered thereafter in writing;
- (d) The Authority would conduct further verification to the extent deemed necessary;
- (e) The Authority would discuss essential facts before announcing final findings.

L. V. SAPTHARISHI, Designated Authority